Roll No. ..... Total Pages : 4

MDQ/M-20 **7675**

तुलसीदास

Paper–X (HI-121)
Opt. (ii)

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

1. निम्नलिखित अवतरणों में से **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) हरि तजि और भजिये काहि?

नाहिनै कोउ राम सो ममता प्रनतपर जाहि।।
कनककसिपु बिरंचि को जन करम मन अरु बात।
सुतहि दुखवत बिधि न बरज्यो कालके घर जात।
संभु सेवक जान जग, बहु बार दिये दस सीस।
करत राम-बिरोध सो सपनेहु न हटक्यों ईस।

(ख) द्वार हौं भोर ही को आजु

रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु।
कलि कराल दुकाल दारून, सब कुभाँति कुसाजु।
नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु।
हहरि हियमें सदय बूझयो जाइ साधु-समाजु।
दीनता दारिद दलै को कृपाबारिधि बाजु।
दानि दसरथराय के, तू बनाइत सिरताजु।।

(ग) नाथ! कृपाहीको पंथ चितवत दीन हौं दिनराति।
होई धौं केहि काल दीनदयालु! जानि न जाति।।

सुगुन ग्यान-बिराग-भगति, सुं-साधननिकी पाँति।
भजे बिकल बिलोकि कलि अघु अवगुननि की थाति।।
अति अनीति-कुरीति भइ भुइँ तरनि हूँ ते ताति।
जाउ कहँ? बलि जाऊँ, कहूँ न ठाउँ मति अकुलाति।।

(घ) आपनो कबहूँ करि जानिहौ।
राम गरीबनिबाज राजमनि, बिरद लाज उर आनिहौ।
सील सिंधु सुन्दर सब लायक, समरथ, सदगुन-खानि हौ।
पाल्यो है, पालत, पालहुगे प्रभु, प्रनत प्रेम पहिचानि हौ।
बेद पुरान कहत, जग जानत, दीनदयालु दिन-दानि हौ।
कहि आवत, बलि जाऊँ, मनहुँ मेरी बार विसार बानि हौ।

(ङ) भरोसो और आइहै डर ताके।
कै कहुँ लहै जो रामहि सो साहिब, कै अपनो बल जाके।।
कै कलिकाल कराल न सूझत, मोह-मार-मद छाके।
कै सुनि स्वाभि सुभाउ न रहयों चित, जो हित सब अंग याके।
हौं जानत भली भाँति अपनपौ, प्रभु सो सुन्यो न साके।
उपल भील, खग, मृग, रजनीचर, भले भये करतव काके।।

(च) भरोसो जाहि दूसरो सो करो।
मोको तो राम को नाम कल्पतरु कलि कल्यान करो।
करम उपासन, ग्यान बेदमत, सो सब भाँति खरो।
मोहि तो 'सावन के अंधहि' ज्यों सूझत रंग हरो।
चाटत रहयो स्वान पातरि ज्यों कबहूँ न पेट भरो।
सो हों सुमिरत नाम-सुधारस पेखत परुसि धरो।

(3×7=21)

2. निम्नलिखित आलोचनात्मक प्रश्नों में से **तीन** का उत्तर दीजिए:

(क) विनय पत्रिका के नामकरण की समीक्षा कीजिए।

(ख) तुलसीदास की नारी-भावना का वर्णन कीजिए।

(ग) भारतीय साहित्य के संदर्भ में तुलसी का मूल्यांकन कीजिए।

(घ) विनयपत्रिका में निहित मनोवैज्ञानिकता का विवेचन कीजिए।

(ङ) आधुनिक संदर्भों में तुलसीदास की प्रासंगिकता का विवेचन कीजिए।

(च) 'विनयपत्रिका' की काव्यभाषा का वर्णन कीजिए।

(3×12=36)

3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से **पाँच** का उत्तर दीजिए:

(क) विनयपत्रिका का उद्देश्य।

(ख) तुलसीदास का जीवन-परिचय।

(ग) तुलसीदास की मर्यादित भावना।

(घ) विनयपत्रिका का गीतिकाव्य।

(ङ) तुलसीदास के राम का शील निरूपण।

(च) विनयपत्रिका का उद्देश्य।

(छ) तुलसीदास द्वारा रचित भरत चरित्र।

(ज) चित्रकूट का वर्णन।

(झ) तुलसीदास का प्रकृति चित्रण।

(ञ) विनयपत्रिका की सीता। (5×3=15)

4. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) तुलसी ने 'बरवै रामायण' की रचना किस भाषा में की है?

(ख) कहे बिनु रह्यो न परत, कहे राम! रस न परत- यह पंक्ति तुलसी के किस ग्रन्थ की है?

(ग) तुलसी की 'कृष्ण गीतावली' में कृष्ण की किस लीला का अधिक वर्णन है?

(घ) विनयपत्रिका का रचनाकाल कब माना जाता है?

(ङ) गोरख जगाओ जोग, भक्ति भगायो भोग-यह पंक्ति किसने कही है?

(च) राम को गुलाम, नाम राम बोला राख्यो राम-यह पंक्ति तुलसी के किस ग्रन्थ में है?

(छ) 'कवितावली' में कितने छन्द हैं?

(ज) कवितावली में कितने काण्ड हैं और कौन-कौन-से छन्द प्रयुक्त किए गए हैं? (8×1=8)